

संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

# ऋषि प्रसाद

मूल्य : ₹ ६ भाषा : हिन्दी  
प्रकाशन दिनांक : १ अगस्त २०१८  
वर्ष : २८ अंक : २  
(निरंतर अंक : ३०८)  
पृष्ठ संख्या : ३६  
(आवरण पृष्ठ सहित)

श्री कृष्ण  
जन्माष्टमी  
३ सितम्बर

राधाजी को  
भगवान  
श्रीकृष्ण का  
तत्त्वोपदेश

पृष्ठ १२

भगवान श्रीकृष्ण के वियोग में तड़पते गोप-गोपियाँ पुकार लगाते हैं : “एक-एक पल कल्प की तरह बीत रहा है। श्यामसुंदर ! तुम्हारे विरह में सारा जगत शून्य हो गया। वह दिन हमारे जीवन में कब आयेगा जब प्रभु ! तुम हमारी आँखों के सामने खड़े होओगे।” जब भगवान वृंदावन आये तो अपनी कृपादृष्टि और तत्त्वोपदेश के अमृतपान से सभीको कृतार्थ कर दिया। पूज्य बापूजी के अगणित साधक, भक्त भी आज ऐसी ही मनोदशा ले के उनके परम मंगलकारी साक्षात् सान्निध्य की तीव्र प्रतीक्षा कर रहे हैं।

पूज्य बापूजी  
की स्पर्शित  
चरणपादुकाओं  
की जोधपुर  
आश्रम में  
शोभायात्रा



जोधपुर जेल के मुख्य द्वार पर भक्तों का हुजूम

जेल पर महाआरती

## गुरुपूर्णिमा पर दिखे भक्तों की बेजोड़ श्रद्धा के अप्रतिम नजारे

पृष्ठ ३३



अहमदाबाद



करोलबाग-दिल्ली



लखनऊ



ग्वालियर



हैदराबाद



राजनंदगाँव (छ.ग.)



शैलेज रावटी, जि. रतलाम (स.प्र.)



भोपाल



रायपुर (छ.ग.)

(आवरण पृष्ठ ४ भी देखें)

## शोभायात्राओं, सम्मेलनों व सेवा-संकल्प द्वारा मनायी गयी 'ऋषि प्रसाद' जयंती



लखनऊ



सुरत



नासिक



पुणे



ऋषि प्रसाद  
जयंती



# हे मनुष्यो ! एकजुट हो जाइये...

समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः ।

समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति ॥

‘हे मनुष्यो ! तुम लोगों के संकल्प और निश्चय एक समान हों, तुम सबके हृदय एक जैसे हों, तुम्हारे मन एक समान हों ताकि तुम्हें सब शुभ, मंगलदायक, सुहावना हो (एवं तुम संगठित हो के अपने सभी कार्य पूर्ण कर सको) ।’

(ऋग्वेद : मंडल १०, सूक्त १९१, मंत्र ४)

यहाँ वेद भगवान हमें संगठन के ३ मूल सिद्धांत बताते हैं :

(१) विचार-साम्य : जगत संकल्पमय है । जब अनेक व्यक्तियों के विचारों में एकजुटता होती है तब उससे सामूहिक संकल्प-शक्ति पैदा होती है, जिसके प्रभाव से दुनिया में क्रांतिकारी बदलाव होते देखे गये हैं । जब-जब



आत्मवेत्ता सत्पुरुष धरती पर अवतरित होते हैं, तब-तब तत्कालीन जितने अधिक लोग उनके सिद्धांत को समझ पाते हैं, उनके पदचिह्नों का अनुसरण कर पाते हैं उतना ज्यादा व्यक्ति, समाज, देश और पूरे विश्व का कल्याण होता है ।

(२) हृदय-साम्य : हृदय का एक अर्थ ‘केन्द्र’ भी होता है । हृदय-साम्य का अर्थ है कि हमारा जो केन्द्रीय सिद्धांत है वह उस एक ‘ईश्वरीय विधान’ के अनुकूल हो । ईश्वरीय विधान यह है कि सबकी भलाई में अपनी भलाई, सबके मंगल में अपना मंगल है क्योंकि सबकी गहराई में एक ही चैतन्य आत्मा विद्यमान है । अतः किसीका अहित न चाहना भगवान की सबसे बड़ी सेवा है । सबका हित चाहने से आपका स्वयं का हृदय मंगलमय हो जायेगा । ईश्वर में आप जितना खोओगे, उनके प्रति आप जितना समर्पित होंगे, ईश्वर आपके द्वारा उतने ही बढ़िया कार्य करवायेंगे । इससे ईश्वर भी मिलेंगे और समाज की सेवा भी हो जायेगी ।

(३) मनःसाम्य : यदि मन-भेद है, मनःसाम्य नहीं है तो बाहर की सुख-सुविधाएँ होते हुए भी लोग भीतर से दुःखी, चिंतित, अशांत रहते हैं । सभीके मन भिन्न-भिन्न हैं, ऐसे में क्या मनःसाम्य सम्भव है ? हाँ, सम्भव है । सभीके मन एक चैतन्यस्वरूप आत्मा से स्फुरित हुए हैं । अतः यदि आत्मदृष्टि एवं आत्मानुकूल व्यवहार का अवलम्बन लिया जाय तो मनःसाम्य के लिए अलग किसी प्रयास की आवश्यकता नहीं रहेगी । इससे जीवन में ‘परमत सहिष्णुता’ आयेगी अर्थात् अपने मत का आग्रह न रहकर दूसरे का जो भी कोई शास्त्रसम्मत मत सामने आयेगा, उसके अनुमोदन एवं पूर्ति में रस आयेगा । इससे अपने व्यक्तिगत अधिकारों की चिंता छूटने लगेगी और दूसरों के शास्त्रसम्मत अधिकारों की रक्षा होने लगेगी । दूसरों द्वारा अपना सही विचार भी अस्वीकृत होने पर व्यक्ति के हृदय में विक्षेप व खेद नहीं होगा बल्कि वह ईश्वर को, सद्गुरु को प्रार्थना करेगा एवं शरणागत होकर हल खोजेगा ।

तो उपरोक्त वैदिक त्रिसूत्री में अपना एवं सबका मंगल समाया हुआ है । अपना एवं समाज का जीवन सुशोभित करने के लिए मानो यह एक ईश्वरीय उपहार ही है ।



# ऋषि प्रसाद

हिन्दी, गुजराती, मराठी, ओड़िया, तेलुगु, कन्नड़, अंग्रेजी, सिंधी, सिंधी (देवनागरी) व बंगाली भाषाओं में प्रकाशित

वर्ष : २८ अंक : २ मूल्य : ₹ ६  
भाषा : हिन्दी निरंतर अंक : ३०८  
प्रकाशन दिनांक : १ अगस्त २०१८  
पृष्ठ संख्या : ३६ (आवरण पृष्ठ सहित)  
श्रावण-भाद्रपद वि.सं. २०७५

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम  
प्रकाशक : धर्मेश जगराम सिंह चौहान  
मुद्रक : राघवेन्द्र सुभाषचन्द्र गादा  
प्रकाशन स्थल : संत श्री आशारामजी आश्रम,  
मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग,  
साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात)  
मुद्रण स्थल : हरि ॐ मैनुफेक्चर्स, कुंजा मतरालियों,  
पौंटा सहिब, सिमौर (हि.प्र.)-१७३०२५  
सम्पादक : श्रीनिवास र. कुलकर्णी  
सहसम्पादक : डॉ. प्रे.खो. मकवाणा  
संरक्षक : श्री सुरेन्द्रनाथ भार्गव  
पूर्व मुख्य न्यायाधीश, सिक्किम; पूर्व  
न्यायाधीश, राज. उच्च न्यायालय; पूर्व अध्यक्ष,  
मानवाधिकार आयोग, असम व मणिपुर

कृपया अपना सदस्यता शुल्क या अन्य किसी भी प्रकार की नकद राशि रजिस्टर्ड या साधारण डाक द्वारा न भेजें। इस माध्यम से कोई भी राशि गुम होने पर आश्रम की जिम्मेदारी नहीं रहेगी। अपनी राशि मनीऑर्डर या डिमांड ड्राफ्ट ('हरि ओम मैनुफेक्चरर्स' (Hari Om Manufacturres) के नाम अहमदाबाद में देय) द्वारा ही भेजने की कृपा करें।

## सम्पर्क पता :

'ऋषि प्रसाद', संत श्री आशारामजी आश्रम,  
संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग,  
साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुज.)

फोन : (०७९) २७५०५०१०-११, ३९८७७७८८

केवल 'ऋषि प्रसाद' पूछताछ हेतु : (०७९) ३९८७७७४२

Email : ashramindia@ashram.org

Website : www.ashram.org,

www.rishiprasad.org

सदस्यता शुल्क (डाक खर्च सहित) भारत में

अवधि	हिन्दी व अन्य	अंग्रेजी
वार्षिक	₹ ६५	₹ ७०
द्विवार्षिक	₹ १२०	₹ १३५
पंचवार्षिक	₹ २५०	₹ ३२५
आजीवन (१२ वर्ष)	₹ ६००	---

## विदेशों में (सभी भाषाएँ)

अवधि	सार्क देश	अन्य देश
वार्षिक	₹ ३००	US \$ 20
द्विवार्षिक	₹ ६००	US \$ 40
पंचवार्षिक	₹ १५००	US \$ 80

Opinions expressed in this publication are not necessarily of the editorial board. Subject to Ahmedabad Jurisdiction.

## इस अंक में...

- ❖ हे मनुष्यो ! एकजुट हो जाइये... २
- ❖ गुरु संदेश ❖ मन को शांत करने के उपाय ४
- ❖ शास्त्र प्रसंग ❖ रामजी का न्याय व उदारता तथा प्रजा को सीख ६
- ❖ आत्मखोज ❖ वास्तविक ब्राह्मी स्थिति - स्वामी अखंडानंदजी ७
- ❖ आप कहते हैं... ८
- ❖ विचार मंथन ❖ कितना ऊँचा होता है महापुरुषों का उद्देश्य ! ९
- ❖ शिक्षा पद्धति ❖ ऐसे शिक्षकों और विद्यार्थियों की जय हो ! १०
- ❖ आर्ष वाणी ❖ सच्चिदानंद परब्रह्म-परमात्मा की अवस्थाएँ ११
- ❖ पर्व मांगल्य ❖ राधाजी को भगवान श्रीकृष्ण का तत्त्वोपदेश १२
- ❖ मिथ्या कलंक से बचें
- ❖ प्रेरक प्रसंग ❖ पूज्य बापूजी के जीवन-प्रसंग १४
- ❖ अस्पताल में हुआ हैरतअंगेज करिश्मा
- ❖ जीवन जीने की कला ❖ मंत्रजप साधना १६
- ❖ योग-वेदांत-सेवा ❖ संगठन की मजबूती के स्वर्णिम सूत्र १७
- ❖ बाल संस्कार ❖ बाल संस्कार शिक्षकों के लिए १७
- ❖ विद्यार्थी संस्कार ❖ गुरु का सम्मान बनाता जीवन को महान १८
- ❖ ईश्वर में मन लगायें या पढ़ाई में ?
- ❖ तेजस्वी युवा ❖ युवाओं की बड़ी समस्या... - साँई श्री लीलाशाहजी २०
- ❖ महिला उत्थान ❖ एक आदर्श नारी, जिनका सम्पूर्ण जीवन है... २१
- ❖ संत चरित्र ❖ ब्रह्ममूर्ति श्री उड़िया बाबाजी का जीवन-चरित्र २२
- ❖ वैराग्य शतक ❖ नित्य सुख की प्राप्ति हेतु श्रेयस्कर उपाय २४
- ❖ तत्त्व दर्शन ❖ परमात्मा को ढूँढ़ना चाहते हो तो आओ... २५
- ❖ संतों की हितभरी अनुभव-वाणी २६
- ❖ संत वेमना ❖ योगी गोरखनाथजी ❖ संत तुकारामजी
- ❖ पौष्टिक व खनिज पदार्थों से भरपूर गोदुग्ध २७
- ❖ बहुतों के जीवन सँवारे हैं बापू ! - श. कुरैशी २८
- ❖ ऐसे सुहृद को मैं कैसे भूलूँगा ? २९
- ❖ स्वास्थ्य संजीवनी ❖ शरद ऋतु में कैसे करें स्वास्थ्य की रक्षा ? ३०
- ❖ उत्तम स्वास्थ्य हेतु कैसा, कब व कितना पियें पानी ?
- ❖ भक्तों के अनुभव
- ❖ बापूजी की संयम-शिक्षा है मेरी जीत का राज - अरुण राजपूत ३२
- ❖ संस्था समाचार ❖ गुरुपूर्णिमा पर देखने को मिली भक्तों की... ३३
- ❖ सुखमय जीवन की अनमोल कुंजियाँ ३४

## विभिन्न चैनलों पर पूज्य बापूजी का सत्संग

			Download Rishi Prasad Official, Rishi Darshan & Mangalmai Official Apps
रोज सुबह ७-०० बजे	रोज रात्रि १०-०० बजे	www.ashram.org/live	

- ❖ 'साधना प्लस न्यूज' चैनल टाटा स्काई (चैनल नं. ५४०), डिश टीवी (चैनल नं. ६७९), रिलायंस डिजिटल टीवी (चैनल नं. ४३१), बिहार में मौर्या सिटी (चैनल नं. ३११), राँची में जीटीपीएल व डेन केबल पर तथा 'JioTV' एन्ड्रोइड एप पर उपलब्ध है।
- ❖ 'डिजियाना दिव्य ज्योति' चैनल मध्य प्रदेश में 'डिजियाना' केबल (चैनल नं. १०९) पर उपलब्ध है।



# सत्य को झुठलाया नहीं जा सकता

– महामंडलेश्वर

श्री सुनील शास्त्री



परमात्मा के अनमोल उपहार बापू, धर्म के स्तम्भ बापू, ७ करोड़ जनता की आत्मा के मार्गदर्शक बापू के साथ ऐसा क्यों ? जरा गहराई से विचार करें ।

संत आशारामजी बापू कल भी वही थे जो धर्म कहता है, बापू आज भी वही हैं जो धर्म कहता है, बापू कल भी वही रहेंगे जो धर्म कहता है । तुम मानोगे तो भी बापू रहेंगे, नहीं मानोगे तो भी बापू रहेंगे । सत्य को किसीकी मान्यता की आवश्यकता नहीं होती । तुम सत्य को झुठला नहीं सकते और छुपा नहीं सकते । उसे प्रकाशित होने में समय लग सकता है ।

रामजी की आलोचना करनेवाले लोग भी रामजी के समय में थे लेकिन आज रामजी की मूर्ति सब जगह है, उन निंदकों की मूर्ति कहीं लगी क्या ? निंदको या विरोध करनेवालो ! कल तुम रहोगे या नहीं रहोगे इसकी तो गारंटी नहीं है लेकिन आशाराम बापू कल थे, आज हैं और चिरकाल तक जनमानस में रहेंगे ।

बापू से प्रेम करनेवालो ! तुम्हारा एक ही दायित्व है कि बापू ने जो तुम्हें मार्ग दिखाया है - सेवा, जप, अनुशासन और भगवद्भक्ति का मार्ग, इसको चरितार्थ करके कुप्रचारकों के गाल पर बढ़िया तमाचा मारो । आप लोग आगे बढ़ो, बापू का आशीर्वाद निश्छल हृदय के साधकों के साथ सदा था, सदा है और सदा रहेगा । □

**ऐसे महापुरुष हैं हमारे सद्गुरु और सद्गुरुओं से मिला है 'ऋषि प्रसाद' !**

– डी.जी. वंजारा, पूर्व प्रमुख, ATS, गुज.

आत्मसाक्षात्कार कर लेनेवाले महापुरुष बहुत विरले होते हैं । उनमें भी जो यह अनुभव करके उसमें स्थिति खुद तो कर ही लेते हैं, साथ ही दूसरों को भी कराने में रत रहते हैं ऐसे महापुरुष अत्यंत विरले होते हैं । उन्हें 'ब्रह्मनिष्ठ, ब्रह्मश्रोत्रिय' कहा जाता है । और ऐसे महापुरुष हैं हमारे सद्गुरु संत श्री आशारामजी बापू । पूज्य बापूजी ब्रह्मनिष्ठ, ब्रह्मविद् ऋषि हैं और ऐसे ऋषियों ने जो उनके सद्गुरुओं से प्रसाद पाया है वह हम तक जिसके द्वारा पहुँचता है, वह है 'ऋषि प्रसाद', 'ऋषि दर्शन' । इस सेवा में जुड़े सभीका मैं खूब-खूब अभिनंदन करता हूँ और हम सबके पूज्य गुरुदेव के चरणों में कोटि-कोटि वंदन करता हूँ ।



**इसलिए समाज में बहुत सुधार हुआ है**

– श्री योगिनी प्रभुश्री गुलबर्गा



परम पूज्य बापूजी जैसे संत दुनिया में कहीं नहीं मिलते । बापूजी का जीवन प्रैक्टिकल जीवन है इसलिए समाज में बहुत सुधार हुआ है । वे स्वयं ब्रह्मचर्य पालते हैं और पिछले ५० सालों से सत्संग में ब्रह्मचर्य का महत्त्व सबको बताते रहे हैं ।

बापूजी का 'तू गुलाब होकर महक' ग्रंथ और 'ऋषि प्रसाद' पत्रिका पढ़कर मैं बहुत प्रभावित हुई । उन्होंने हिन्दू धर्म का बहुत प्रचार किया है । उन पर बहुत गलत आरोप लगवाया गया है । यह तो षड्यंत्र है । बापूजी सत्य हैं, भगवत्स्वरूप हैं ।





### (गणेश/कलंक चतुर्थी पर विशेष)

भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष की चतुर्थी को चन्द्र-दर्शन निषिद्ध माना गया है। इसी दिन चन्द्र-दर्शन से भगवान् श्रीकृष्ण पर स्यमंतक मणि की चोरी का मिथ्या कलंक लगा था।

पौराणिक कथा के अनुसार कहते हैं कि एक दिन चन्द्रमा को अपने सौंदर्य का अभिमान हो गया और उन्होंने गजवदन गणेशजी का उपहास कर दिया। अपने तिरस्कार को ताड़कर गणेशजी ने शाप दिया कि “आज से तुम काले-कलंक से युक्त हो जाओ तथा जो भी आज के दिन तुम्हारा मुख देखेगा वह भी कलंक का पात्र होगा।” उस दिन भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी थी।

चन्द्रमा के क्षमा-याचना करने पर गणपतिजी ने कहा : “आगे से तुम सूर्य से प्रकाश पाकर महीने में एक दिन पूर्णता को प्राप्त करोगे। मेरा शाप केवल भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी को विशेष रहेगा, बाकी चतुर्थियों पर इतना प्रभावी नहीं होगा। इस दिन जो मेरा पूजन करेगा उसका मिथ्या कलंक मिट जायेगा।”

चतुर्थी तिथि के स्वामी गणपति हैं। उपरोक्त प्रसंग से लेकर आज तक अनेक लोगों ने गणपतिजी के उस शाप के प्रभाव का अनुभव किया तथा निरंतर अनुसंधानगत प्रमाणों के कारण आम जनमानस ने भी इसे स्वीकार किया।

चतुर्थी को चन्द्र-दर्शन के निषेध का वैज्ञानिक कारण यह है कि इस दिन सूर्य, चन्द्र और पृथ्वी एक ऐसी त्रिभुज कक्षा में रहते हैं जिससे प्राणशक्ति की विषमता रहती है। सूर्य चारों ओर से केवल प्राणशक्ति बरसानेवाला ही नहीं है अपितु उसमें मारक किरणों की भी सत्ता है। पृथ्वी की ओर सूर्य का एक बाजू ही सदैव नहीं रहता, पृथ्वी के भ्रमण के कारण वह प्रतिक्षण बदलता रहता है। यह दशा चन्द्र पिंड की

# मिथ्या कलंक से बचें

भी है। प्रायः सब चतुर्थियों को और खासकर भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी को अपनी चौथी कला दशानेवाला चन्द्रमा सूर्य की मृत्यु-किरणवाले भाग से प्रकाशित होता है। हमारा मन चन्द्र से अनुप्राणित (प्रेरित) है। भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी को चन्द्र-दर्शन करने से हमारा मन भी चन्द्रमा की विकृत तरंगों से तरंगित होगा व अशुभ फलप्राप्ति का निमित्त बनेगा। अतः इस दिन चन्द्र-दर्शन निषिद्ध है।

इस वर्ष १२ सितम्बर (चन्द्रास्त : रात्रि ८.५९ बजे) व १३ सितम्बर (चन्द्रास्त : रात्रि ९.४२ बजे) – दो दिन चन्द्र-दर्शन निषिद्ध है।

### अनिच्छा से चन्द्र-दर्शन हो जाय तो...

यदि भूल से भी चौथ का चन्द्रमा दिख जाय तो ‘श्रीमद्भागवत’ के १०वें स्कंध के ५६-५७वें अध्याय में दी गयी ‘स्यमंतक मणि की चोरी’ की कथा का आदरपूर्वक पठन-श्रवण करना चाहिए।

निम्नलिखित मंत्र का २१, ५४ या १०८ बार जप करके पवित्र किया हुआ जल पीने से कलंक का प्रभाव कम होता है।

**सिंहः प्रसेनमवधीत् सिंहो जाम्बवता हतः ।**

**सुकुमारक मा रोदीस्तव ह्येष स्यमन्तकः ॥**

‘सुंदर, सलोन कुमार ! इस मणि के लिए सिंह ने प्रसेन को मारा है और जाम्बवान ने उस सिंह का संहार किया है अतः तुम रोओ मत। अब इस स्यमंतक मणि पर तुम्हारा ही अधिकार है।’

(ब्रह्मवैवर्त पुराण : ७८.६२-६३)

चौथ के चन्द्र-दर्शन से कलंक लगता है। दर्शन हो जाय तो उपरोक्त मंत्र-प्रयोग अथवा तृतीया (११ सितम्बर) या पंचमी (१४ सितम्बर) के चन्द्रमा का दर्शन कर लो और ‘स्यमंतक मणि की चोरी’ की कथा का वाचन या श्रवण करो। इससे अच्छी तरह कुप्रभाव मिटता है।





## विद्यार्थी संस्कार



# गुरु का सम्मान बनाता जीवन को महान



एक बार महात्मा गांधी राजकोट में सौराष्ट्र-काठियावाड़ राज्य प्रजा परिषद के सम्मेलन में भाग ले रहे थे। वे गणमान्य व्यक्तियों के बीच मंच पर बैठे थे। उनकी दृष्टि सभा में बैठे एक वृद्ध सज्जन पर पड़ी। अचानक वे अपने स्थान से उठे और लोगों के देखते-

देखते उन वृद्ध महोदय के पास जा पहुँचे। सभी लोग चकित थे कि गांधीजी आखिर यह क्या कर रहे हैं ! गांधीजी ने उन वृद्ध सज्जन के चरण स्पर्श किये और उन्हींके पास बैठ गये। आयोजकों ने जब उनसे मंच पर चलने की प्रार्थना की तब वे बोले : “ये मेरे गुरुदेव हैं। मैं अपने गुरुदेव के चरणों में बैठकर ही सम्मेलन की कार्यवाही का अवलोकन करूँगा। वे नीचे बैठें और मैं ऊपर मंच पर - यह कैसे हो सकता है !”

सम्मेलन की समाप्ति पर उन गुरु ने गांधीजी को आशीर्वाद देते हुए कहा : “तुम जैसा निरभिमानी व्यक्ति एक दिन संसार के महान पुरुषों में अपना स्थान बनायेगा।”

पूरी सभा गांधीजी का अपने गुरुदेव के प्रति ऐसा आदर भाव देखकर हर्ष से अभिभूत हो उठी। गुरु का आदर ज्ञान का आदर है और ज्ञान का आदर अपने मनुष्य-जीवन का आदर है और यही आदर व्यक्ति को महान बनाता है।

अगर ऐसे दुर्लभ मनुष्य-जीवन में जन्म-मृत्यु जैसे महादुःख का विनाश करनेवाले कोई परम गुरु, ब्रह्मज्ञानी सद्गुरु मिल जायें तो कहना ही क्या ! उनका जितना आदर करें, कम ही है।

## प्रेरक पंक्तियाँ

जलती आग बुझा न पाये वह नीर ही क्या ?  
अपने लक्ष्य को भेद न पाये वह तीर ही क्या ?  
संग्राम में लाखों पर विजय पानेवाले भी अगर,  
मन को जीत न पाये तो वीर ही क्या ?

## उन्नति के शिखर पर पहुँचना हो तो

- पूज्य बापूजी

तुम अपना आत्मबल बढ़ाओ। कठिन-से-कठिन कार्य को भी हिम्मत और बुद्धिपूर्वक आसानी से पूर्ण करने की विद्या सीखो। उन्नति के शिखर पर पहुँचना हो तो निराशा व दुर्बलता को तुरंत त्याग दो। बल ही जीवन है, दुर्बलता ही मृत्यु है। ऊँची आशा ऊँची राह पर ले जाती है और निर्वासना (निर्वासनिकता) परब्रह्म-परमात्मा के अनुभव तक ले जाती है।

## किनके सद्गुरु कौन ?

नीचे बायीं ओर की सूची में ऐसे सत्शिष्यों के नाम दिये गये हैं, जो अपने गुरुदेव के कृपा-प्रसाद से आत्मसाक्षात्कार कर सद्गुरु-पद पर प्रतिष्ठित हुए। दायीं ओर की सूची में से इन सत्शिष्यों के सद्गुरुओं के नाम पहचानिये।

- |                       |                        |
|-----------------------|------------------------|
| (१) राजा जनक          | (क) गौड़पादाचार्यजी    |
| (२) शुकदेवजी          | (ख) स्वामी केशवानंदजी  |
| (३) अंगददेवजी         | (ग) महर्षि अष्टावक्रजी |
| (४) गोविंदपादाचार्यजी | (घ) गोविंदपादाचार्यजी  |
| (५) आद्य शंकराचार्यजी | (ङ) राजा जनक           |
| (६) नामदेवजी          | (च) युक्तेश्वर गिरिजी  |
| (७) रामकृष्ण परमहंस   | (छ) विसोबा खेचर        |
| (८) परमहंस योगानंदजी  | (ज) तोतापुरीजी         |
| (९) साँई लीलाशाहजी    | (झ) गुरु नानकदेवजी     |
- (उत्तर इसी अंक में)



## ब्रह्ममूर्ति श्री उड़िया बाबाजी का जीवन-चरित्र

स्वामी अखंडानंदजी सरस्वती का श्री उड़िया बाबाजी के साथ घनिष्ठ संबंध रहा। वे बाबा को अपने सद्गुरुरूप में मानते थे। अखंडानंदजी ने अपने साहित्य 'पावन प्रसंग' में उड़िया बाबा के जीवन-प्रसंगों को उनके आध्यात्मिक पक्ष पर विशेष बल देते हुए प्रस्तुत किया है, जो यहाँ संक्षिप्तरूप में दिये जा रहे हैं। ईश्वरप्राप्ति के जिज्ञासुओं को ये लाभदायक साबित होंगे।

स्वामी अखंडानंदजी लिखते हैं :

तीर्थराज प्रयाग के पुण्यक्षेत्र प्रतिष्ठानपुर (झूसी) में ब्रह्मचारी श्री प्रभुदत्तजी महाराज द्वारा आयोजित 'अखंड हरिनाम-संकीर्तन यज्ञ' के अवसर पर मैं श्रीमद्भागवत पर प्रवचन कर रहा था। सहसा कथा में बिना कोई विघ्न डाले एक महापुरुष आकर सम्मुख बालू पर विराजमान हो गये। सिद्धासन लग गया। दिव्य भव्य मूर्ति। प्रसन्न-गम्भीर मुद्रा, प्रभावशाली व्यक्तित्व। एकाएक लोग परस्पर कुछ कानों-कान बताने लगे : 'ये ही लोकविख्यात महात्मा श्री उड़िया बाबाजी महाराज हैं।' मैंने प्रवचन करते-ही-करते हाथ जोड़े, सिर झुकाया।

प्रवचन की समाप्ति पर मैं उनके साथ उस फूस की बनी झोंपड़ी में गया, जिसमें वे ठहरे थे। सत्संग का रंग जमा। वेदांत-संबंधी प्रश्नोत्तर होने लगे। वहाँ विद्वान, विरक्त, अनुभवी व जिज्ञासुओं

की भीड़ लगी थी। श्री महाराजजी से मैंने भी एक प्रश्न किया : "पुनर्जन्म किसका होता है?"

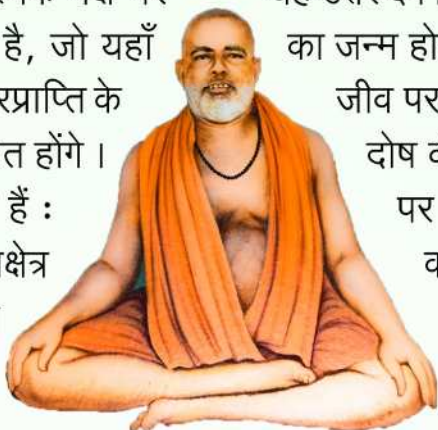
**मेरा मनोराज्य मन में ही रह गया**

मेरे मन में कुछ ऐसा था कि यदि महाराजजी यह उत्तर देंगे कि सप्तदश तत्त्वात्मक लिंग शरीर<sup>१</sup> का जन्म होता है अथवा पुनर्जन्म न मानने से जीव पर अकृताभ्यागम<sup>२</sup> और कृतविपाश<sup>३</sup> दोष की प्राप्ति होती है, साथ ही ईश्वर पर भी वैषम्यनैर्घृण्य<sup>४</sup> दोष के आरोप का अवसर प्राप्त होता है तो मैं निश्चितरूप से कहूँगा कि 'आत्मा असंग द्रष्टा है, लिंग शरीर का जन्म-जन्मांतर हो तो होता रहे, मुझ आत्मा का उससे क्या संबंध है' परंतु मेरा मनोराज्य मन में ही रह गया।

वे प्रसन्न मुद्रा में बोले : "बेटा ! तुम अपनी बुद्धि का प्रयोग पुनर्जन्म की सिद्धि में मत करो, उसके निषेध में करो।"

यह अतर्कित (अनसोचा) उत्तर सुनकर मैं आश्चर्यचकित रह गया। सचमुच यह उत्तर अश्रुतपूर्व था, करुणापूर्ण था, परमार्थ का बोधक था। यहीं से 'मैं मुक्त हूँ' यह अभिमान छोड़कर सत्संग करने की दृढ़ प्रेरणा प्राप्त हुई।

(ध्यान दें : पुनर्जन्म के निषेध की बात जगत से वैराग्य एवं वेदांत के अभ्यास में ईमानदारी से लगे जिज्ञासुओं के लिए कही गयी है। कोई इस



श्री उड़िया बाबाजी

१. पाँच कर्मेन्द्रियाँ, पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ, पाँच प्राण, मन और बुद्धि - इन १७ तत्त्वों का बना सूक्ष्म शरीर।
२. पूर्वकर्मों के कारण ही जन्म लेकर उनका फल भोगना पड़ता है। फिर सृष्टि के आरम्भ में जो जीव उत्पन्न हुए उन्होंने जो कर्म किये नहीं हैं उनका फल वे जन्म के रूप में कैसे भोग सकते हैं ?
३. अगर जीव का मृत्यु के बाद पुनर्जन्म नहीं होता हो तो उनके द्वारा किये गये पूर्वकर्मों को भोगे बिना वे मुक्त कैसे हो सकते हैं ?
४. विषम होना याने पक्षपाती और तरंगी स्वभाव का होना याने सृष्टि के आरम्भ में जब किसी जीव का कोई पूर्वकर्म नहीं है तब किसीको राजा बना देना और किसीको दरिद्र बना देना। नैर्घृण्य याने निर्दयता।



## बापूजी की संयम-शिक्षा है मेरी कुशतियों में जीत का राज



मेरा परम सौभाग्य है जो मुझे पूज्य बापूजी से सारस्वत्य मंत्र की दीक्षा लेने और अहमदाबाद गुरुकुल में रहकर अध्ययन करने का अवसर मिला। बापूजी कहते हैं, 'दिव्य प्रेरणा-प्रकाश' पुस्तक पढ़नी चाहिए। मैंने इस संयम-शिक्षा प्रेरक ग्रंथ को पढ़ने का नियम लिया। ब्रह्मचर्य के नियमों का पालन करने से मुझे बड़ा लाभ हुआ।

गुरुकुल में पढ़ाई करने व आध्यात्मिक सुसंस्कार पाने के साथ-साथ मैंने खेलकूद में भी भाग लेना शुरू किया। गुरुकृपा से मुझे कई प्रतियोगिताओं में सफलताएँ व पुरस्कार मिले।

२०१५ में उज्जैन में आयोजित ६१वें 'National School Games 2015-16' में मेरा चयन हुआ। खेल महाकुम्भ-२०१६ में राज्यस्तरीय कुश्ती में सभी मैच जीतकर मैंने

गुजरात में प्रथम स्थान पाया, जिसके फलस्वरूप मुझे स्वर्ण पदक व १०,००० रुपये के पुरस्कार से सम्मानित किया गया। खेल महाकुम्भ-२०१७ में राज्यस्तरीय कुश्ती में मुझे कांस्य पदक व ५००० रुपये का पुरस्कार मिला।

२०१८ में राज्य स्तर की कुश्ती में मैंने गुजरात में प्रथम स्थान प्राप्त किया व राष्ट्र स्तरीय कुश्ती के लिए मेरा चयन हुआ। इसी वर्ष दिल्ली में आयोजित ६३वें 'National School Games 2017-18' में मैंने ५ में से ४ मैच जीते।

पूज्य सद्गुरुदेव से प्रार्थना है कि जैसा संयमी जीवन गुरुकुल में जिया वैसा ही आगे भी बना रहे और मैं हमेशा सन्मार्ग पर ही चलता रहूँ।

— अरुण राजपूत

सचल दूरभाष : ८०५३६७७०५७



मनायी गयी

# ऋषि प्रसाद की २९वीं जयंती

हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी ऋषि प्रसाद जयंती उत्साहपूर्वक मनायी गयी तथा ऋषि प्रसाद की शोभायात्राएँ निकाली गयीं। इसकी २९वीं जयंती पर सभी आश्रमों में विशेष कार्यक्रम सम्पन्न हुए एवं धर्मप्रेमी पुण्यात्माओं द्वारा पूज्य बापूजी एवं महापुरुषों की अमृतवाणी के प्रसाद 'ऋषि प्रसाद' को जन-जन तक पहुँचाने का संकल्प लिया गया। उन्होंने अपने-अपने अनुभव-कथन करते हुए बताया कि किस प्रकार इस सेवा ने उनके और लाखों पाठकों के जीवन को उन्नत कर दिया है।







# रिषिदर्शन विडियो मैगजीन का विशेष उपहार घर बैठे प्राप्त करें

₹ २५० का ५ डी.वी.डी. का प्रत्येक सेट मात्र ₹ १५० में ! (फ्री डिलीवरी !)

इन सेट्स के कुछ मुख्य आकर्षण : \* पूज्य बापूजी की घाटवाले बाबा के साथ ज्ञान-चर्चा तथा लालजी महाराज के साथ स्नेह-मिलन \* आओ मनायें गुरुवर का जन्मदिन... (कव्वाली) \* हँसते-हँसाते ज्ञानवर्षा \* बापूजी के संग नौका-विहार \* प्रश्नोत्तर \* १० सेकंड में हादसा व चमत्कार ! \* बच्चों के साथ बापूजी... (ज्ञानमयी लीला) \* बापूजी बने राम, किया रावण-दहन \* बापूजी की रेलयात्रा का अद्भुत नजारा... तथा और भी बहुत कुछ !

तो आज ही मँगवायें, योजना डी.वी.डी. की उपलब्धता तक ही सीमित !

सम्पर्क : (०७९) ३९८७७७७७/८८

Email: contact@rishidarshan.org visit: www.rishidarshan.org

मातृशक्ति की महिमा का परिचय देनेवाले प्रेरक प्रसंगों से सुसज्ज नयी पुस्तक



## माँ ! तू कितनी महान...

इसमें आप पायेंगे : \* महिलाओं हेतु आदर्शरूप पूर्व की महान माताओं की शिक्षाएँ एवं आचरण \* कैसे करें दिव्य संस्कारों का सिंचन ? \* संतान को तेजस्वी व हर क्षेत्र में सफल बनाने के उपाय \* बच्चों की गंदी आदतें कैसे दूर करें ? \* बच्चे बहुत परेशान करते हों तो माताएँ क्या करें ? \* महापुरुषों, वैज्ञानिकों, देशभक्तों की महानता के मूल में माँ का कितना योगदान !

आप अपनी संतानों की बुद्धिमान, प्रतिभाशाली एवं सफल बनाना चाहते हैं तो अवश्य पढ़ें यह पुस्तक !

## रसायन टेबलेट व चूर्ण

\* ये पौष्टिक, बलप्रद, खुलकर पेशाब लानेवाले हैं। \* जीर्णज्वर तथा धातुगत ज्वर दूर करते हैं। \* उदर-रोग, आँतों के दोष, मूत्रसंबंधी विकार, स्वप्नदोष तथा धातुसंबंधी बीमारियों में लाभ करते हैं। \* पाचनतंत्र, नाडीतंत्र तथा ओज-वीर्य की रक्षा करते हैं। \* शक्ति, स्फूर्ति, ताजगी तथा दीर्घ जीवन देनेवाले हैं। \* छोटे-बड़े, रोगी-निरोगी - सभी इन्हें ले सकते हैं। ये बड़ी उम्र में होनेवाले रोगों का नाश करते हैं। ४० वर्ष की उम्र से बड़े हर व्यक्ति को तो निरोग रहने हेतु इनका सेवन विशेषरूप से करना चाहिए।



**संतकृपा चूर्ण** ताजगी, स्फूर्ति एवं उत्तम स्वास्थ्य के लिए संत-महात्मा की प्रेरणा-प्रसादी

पेट के अनेक विकार जैसे कब्ज, गैस की तकलीफ, बदहजमी, अरुचि, भूख की कमी, अम्लपित्त (hyper-acidity), कृमि तथा सर्दी, जुकाम, खाँसी, सिरदर्द आदि दूर करने में कारगर तथा विशेष शक्ति, स्फूर्ति एवं ताजगी प्रदायक चूर्ण।



## वायुनाशक श्रेष्ठ रसायन हिंगादि हरड़ चूर्ण

गैस, अम्लपित्त, कब्जियत, अफरा, सिरदर्द, अपच, अरुचि, मंदाग्नि एवं पेट के अन्य छोटे-मोटे असंख्य रोगों के अलावा खाँसी, संधिवात, हृदयरोग, सर्दी, कफ तथा स्त्रियों के मासिक धर्म की पीड़ा में लाभप्रद है।



## मालिश तेल

यह तेल जोड़ों के दर्द के लिए अत्यंत उपयुक्त है। अंदरूनी चोट, पैर में मोच आना आदि में हलके हाथ से मालिश करके गर्म कपड़े से सेंकने पर शीघ्र लाभ होता है।



उपरोक्त सामग्री आप अपने नजदीकी संत श्री आशारामजी आश्रम या समिति के सेवाकेन्द्र से प्राप्त कर सकते हैं। अन्य उत्पादों व सभीके विस्तृत लाभ आदि की जानकारी के लिए एवं घर बैठे सामग्री प्राप्त करने हेतु गूगल प्ले स्टोर से डाउनलोड करें : "Ashram eStore" App या विजिट करें : www.ashramestore.com रजिस्टर्ड पोस्ट से मँगवाने हेतु सम्पर्क : (०७९) ३९८७७७३०, ई-मेल : contact@ashramestore.com



# गुरुपूर्णिमा पर देश-विदेश के आश्रमों में उमड़ पड़ी गुरुभक्तों की भीड़



पटना



बेलौदी, जि. दुर्ग (छ.ग.)



न्यूजर्सी (यू.एस.ए.)



ब्राम्पटन (कनाडा)



इंदौर



पठानकोट (पंजाब)



प्रयागराज



बेंगलुरु



राँची



गोंदिया (महा.)



आलंदी, जि. पुणे



कपास्थल, जि. धार (म.प्र.)



बोर्डसर, जि. पालाथर (महा.)



गौरगाँव-मुंबई



उदयपुर



दरभंगा (बिहार)



जम्मू

## महिला उत्थान मंडल का 'चलें स्व की ओर...' जप-अनुष्ठान शिविर



यह शिविर अनसूया आश्रम, अहमदाबाद में सम्पन्न हुआ।



स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं। अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट [www.ashram.org/sewa](http://www.ashram.org/sewa) देखें।

## रक्षाबंधन हेतु वैदिक रक्षासूत्र

शुभ भाव, शुभ संकल्प तथा रक्षा का वचन सँजोया हुआ रक्षासूत्र यदि वैदिक रीति से बना हो तथा वैदिक मंत्रोच्चारण व भगवद्भाव सहित शुभ संकल्प करके बाँधा जाय तो उसका सामर्थ्य असीम हो जाता है। प्रतिवर्ष के अनुसार इस वर्ष भी महिला उत्थान मंडल द्वारा दूर्वा, अक्षत, सरसों, कुमकुम और हल्दी इन पाँच चीजों के मिश्रण के साथ सुसज्जित रुद्राक्ष तथा बापूजी की वाटिका की तुलसी के मनकों की वैदिक राखियाँ बनायी गयी हैं।

इन्हें आप नजदीकी संत श्री आशारामजी आश्रम या समिति के सेवाकेन्द्रों से प्राप्त कर सकते हैं।

रजिस्टर्ड पोस्ट से मँगवाने हेतु सम्पर्क : (०७९) ३९८७७७१३/३२, ई-मेल : [contact@ashramstore.com](mailto:contact@ashramstore.com)

अब आप पूज्य बापूजी के २० तथा ३० मिनट के उत्तम विडियो क्वालिटी के तात्त्विक तथा सारगर्भित सत्संग एपिसोड्स [www.ashramstore.com/videos](http://www.ashramstore.com/videos) पर प्राप्त कर सकते हैं।

अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें : ६३५४५२५६५७, (०७९) ३९८७७८५३